प्रवासी महिला कथाकारों का कथा–साहित्य : संवेदना एवं शिल्प

(अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा की हिन्दी विषय की पी–एच डी॰
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
'रूपरेखा'
सन्–2019

निर्देशिका :

प्रो॰ शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग
कला संकाय

शोध छात्रा :

सदफ इश्त्याक़
एम॰ए॰ एम॰ फिल॰ (हिन्दी)

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो॰ शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख
प्रो॰ जे॰ के॰ वर्मा

(हिन्दी विभाग – कला संकाय)
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा– 282005

शोध परिचय

परिवेश कोई भी हो, देशी या परदेशी, संवेदनशील मन की छटपटाहट, ज़िन्दगी का कभी मुस्कुराना और रूठना, जीवन की लकीरें कभी पूर्णविराम, कभी अर्द्धविराम व कभी प्रश्नवाचक सभी को कलम की नोक से भावनाओं की स्याही में डुबोकर साहित्य लिखा जाता रहा है। कहा जाता है कि साहित्य को खाँचों में बाँटकर नहीं देखा जाना चाहिए लेकिन सच यह है कि साहित्य को पूरे होशोहवास में खाँचों में रखकर ही देखा जाता है। अगर ऐसा नहीं होता तो साहित्य के विशाल वटवृक्ष की अनेक समृद्ध और सशक्त शाखाओं में से एक 'प्रवासी साहित्य' का अस्तित्व ही नहीं होता।

आज प्रवासी हिंदी साहित्य अपनी रचनाधर्मिता से हिंदी के साहित्य को सघन बनाने के साथ–साथ पाठक वर्ग को प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भू–भाग से जुड़े लोगों के परिवेश से अवगत कराने का कार्य कर रहा है। यह एक नवीन विधा है एवं चेतना है जो प्रवासियों की संवेदनाओं से जुड़ी है। यह न केवल एक नई विचारधारा है बल्कि एक नई अंतर्दृष्टि भी है जिसे अपनी जगह बनाने में पर्याप्त समय लगा है।

प्रवास शब्द 'वस्' धातु मे ं'प्र' उपसर्ग लगाने से बना है। 'वस्' का प्रयोग निवास करने के अर्थ में किया जाता है और 'प्र' उपसर्ग लगाने से इसका अर्थ बदल जाता है। इस प्रकार से 'प्रवास' का अर्थ है विदेश गमन, विदेश में बसना तथा अपने देश अथवा घर से बाहर रहना। अतः किसी अन्य देश या निज जन्म स्थान व देश को छोड़कर अन्य इतर देश में जाने वाला 'प्रवासी' कहलाता है। डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा के शब्दों में ''विदेश में लिखे जा रहे साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है।'' हर देश के साहित्य की भिन्नता वहाँ के परिवेश, जीवन मूल्य, मानसिकता, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकारों से होती है।

आज भूमण्डलीकरण की परिकल्पना के कारण विदेश का अर्थ बदलकर प्रवास और विदेशी का अर्थ बदलकर प्रवासी हो गया है अर्थात् वह भारतवंशी जो विदेशों में किसी प्रयोजन हेतु स्वेच्छा से या फिर बलपूर्वक जाकर बस गये, 'प्रवासी' कहलाए। इन प्रवासियों में प्रमुख रूप से तीन

वर्ग के लोग हैं। एक वर्ग जो अंग्रेजों द्वारा उनके नए उपनिवेशों में मजदूरी करवाने के लिए गुलामों की तरह बलपूर्वक ले जाए गए जिसमें मॉरीशस, त्रिनिदाद, दक्षिणी अफ्रीका, गयाना, सूरीनाम, फिजी आदि देशों में जाकर बस गये और गिरमिटिया मजदूर के रूप में विख्यात हो गये। ये भारतवंशी हिन्दी व हिन्दुस्तानी जीवन मूल्यों को बचाने के लिए समस्त अनुष्ठान, क्रिया–कर्म व दैनिक गतिविधियाँ हिन्दी भाषा में करने लगे। चूँकि इस वर्ग के लोग अधिकांशतः अशिक्षित थे तथा उपनिवेशों के अधीनस्थ मजदूरी करके जीवन यापन करते थे। अतः इनको देश वापस लौटने न दिया गया। दूसरे वर्ग में 80 के दशक में खाड़ी देशों में गए अशिक्षित–अर्द्धशिक्षित, कुशल–अर्द्धकुशल मज़दूर आते हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति, सभ्यता व अपने संस्कारों को हिंदी भाषा के माध्यम से जीवित रखा। तीसरा वर्ग शिक्षित व सभ्य वर्ग था जो किसी प्रयोजन हेतु विदेशों में जाकर बस गया किन्तु भारत से मेलजोल बनाए रहे। इस वर्ग में अमेरिका, कनाडा, यू.के., इटली, रूस, नार्वे, स्वीडन, नीदरलैण्ड, फ्रांस, डेनमार्क आदि जगहों के भारतवंशी आते हैं जो इतर देशों में हो रहे भारतवंशियों पर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, वैमनस्य, संघर्ष, भेदभावयुक्त यातनाओं को होते देखते या भोगते हैं। इन्हीं चुनौतीपूर्ण यातनाओं के दम्भ के कारण प्रवासी लेखक प्रवास के दुःख–दर्द को संवेदनाओं के साथ अपने देश के संस्कारों को जोड़कर उनमें व्याप्त पारिवेशिक विषमताओं को कागज़ पर उतार देता है और यही संवेदनाएँ सहज ही सबसे जुड़ सबकी संवेदनाएँ बन जाती हैं।

संवेदना एक ऐसा भाव है जो मनुष्य के जीवन और परिवेश से कहीं न कहीं जुड़ा होता है। समाज में रहने वाला साहित्यकार भी संवेदनशील प्राणी होता है जोकि समाज को बहुत नज़दीक से देखता है और अपनी पारखी नज़रों से परख कर उसमें व्याप्त मानवीय संवेदनाओं से अनुप्राणित हो उनका समायोजन अपने कथा–साहित्य में करता है। रचनात्मक संसार में अपने जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति करना एक कथाकार का महत्वपूर्ण कार्य होता है। इसके द्वारा वह विविध सामाजिक मूल्यों को अपने साहित्य में अनुस्यूत करता है। संवेदना मानव की विविध परिस्तिथियों यथा आर्थिक,

सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक इत्यादि से प्रभावित होती है और यही प्रभावना एक साहित्यकार के सृजन को उत्कृष्ट बनाती है।

इस तरह हम देखते हैं कि साहित्यकार में आम आदमी से ज़्यादा सृजनशीलता होती है। वह अपनी सृजनशीलता के माध्यम से अपने मनोभावों को, अपनी संवेदनाओं को साहित्य में रूपाकार देता है। यही रूपाकार जब पाठक की भावनाओं से मेल खाता है, तभी वह पाठक के हृदय को छूने में सक्षम होता है। संवेदनाएँ वह होती हैं जो सहज रूप में सामने वाले को अनुप्राणित करें। एक साहित्यकार इन्ही का प्रणयन कथा–साहित्य में कर, एक पाठक के मन के करीब हो जाता है। जब तक पाठक का जुड़ाव साहित्यकार से नहीं होगा, जब तक पाठक की संवेदनाएँ साहित्यकार की संवेदनाओं से मेल नहीं खायेंगी, तब तक उसका साहित्य लोकप्रिय नहीं होगा या दूसरे शब्दों में कहें तो जन–जन का साहित्य नहीं होगा।

कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य एक लोकप्रिय साहित्य है जिसे पढ़कर मानव उस देश विदेश की सभ्यता व संस्कृति से परिचित होता है और उस देश के विषय में जानकारी प्राप्त कर ज्ञानार्जन करता है व भूमंडलीकरण के क्षेत्र में एक कदम आगे बढ़ाता है।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पूर्व उसकी सम्पूर्ण अवधारणा व विविध प्रतिमानों से अवगत होना पड़ता है। एम॰फिल॰ करते समय मुझे डॉ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा तथा हिंदी वैश्विक संस्थान नीदरलैंड द्वारा आयोजित द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ''प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा एवं दिशा'' में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसमें उपस्थित होकर मैंने प्रवासी साहित्य को एक जिज्ञासु की दृष्टि से जाना। चूँकि इस संगोष्ठी में कई प्रवासी साहित्यकारों के साथ अन्य विश्वविद्यालयों के वह साहित्यकार भी उपस्थित थे, जिन्होंने विविध देशों में प्रवास के दौरान रचनात्मक लेखन कार्य किया। मैंने इस संगोष्ठी में उपस्थित विविध प्रवासी साहित्यकारों के अनुभवों से प्रेरित होकर ही अपने शोध का केंद्र बिंदु प्रवासी साहित्य को

बनाया। तत्पश्चात् मुझे पुनः ''प्रवासी साहित्य और सुदर्शन प्रियदर्शिनी'' द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध–पत्र वाचन का अवसर प्राप्त हुआ। इस संगोष्ठी में मेरी मुलाकात सुदर्शन प्रियदर्शिनी से हुई और उनकी कहानी 'अखबारवाला' उन्हीं के मुख से सुनने के बाद, प्रवासियों की संवेदनाओं की गूँज ने मेरे अंतर्मन को झकझोर दिया, तभी मैंने प्रवासी साहित्य पर शोध करने का निश्चय किया।

इसके उपरान्त प्रस्तुत विषय ''प्रवासी महिला कथाकारों का कथा–साहित्य : संवेदना एवं शिल्प (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)'' के निर्धारण में मेरी शोध निर्देशिका प्रो॰ शर्मिला सक्सेना ने मेरी सहायता की। इसके बाद विषय से सम्बंधित सामग्री संकलन हेतु मैंने डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा के केंद्रीय पुस्तकालय, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, दयालबाग शिक्षण संस्थान एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के पुस्तकालय को आधार बनाया। इसी के साथ आगरा में आयोजित आगरा पुस्तक मेलें से मैंने प्रवासी साहित्य पर आधारित विविध पुस्तकों को खरीदा। विषय से सम्बन्धित सभी सामग्री का संकलन करने के पश्चात् ''प्रवासी महिला कथाकारों का कथा–साहित्य : संवेदना एवं शिल्प (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)'' विषय पर शोध कार्य करने की मेरी इच्छा बलवती हो गयी।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य

इस अनुसंधान के माध्यम से अमेरिका के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त संवेदनाओं तथा शिल्पगत वैशिष्ट्य को उजागर कर यथार्थ की पृष्ठभूमि पर रखने की सफल कोशिश की जायेगी। कथा–साहित्य में निहित यथार्थ सूक्ष्म तंतुओं की पड़ताल करने का प्रयास किया जायेगा जिसका उद्देश्य मानवीय संवेदना के धरातल को स्पर्श करना और उच्च मानवीय गरिमा को स्थापित करना होगा। साथ ही उदात्त मानव मूल्यों को प्रसारित व प्रचारित करने का उद्देश्य भी निहित है। प्रवासी भारतीय अपनी समस्त संवेदनाओं के द्वारा भारतीय और वहाँ के जन–जीवन में होने वाले बदलावों को आत्मसात कर एक नए जीवन का आरम्भ करता है। नए जीवन में दोनों देशों की सभ्यता एवं संस्कृति का मिश्रण एवं होने वाली टकराहट उसकी संवेदनाओं को एक नया आयाम देती है। प्रवासी

जीवन के इन सभी पहलुओं का समग्र रूप से अध्ययन करके समाज के समक्ष संवेदनाओं के विविध आयामों के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना मेरे शोध कार्य का उद्देश्य है।

साथ ही कथा–साहित्य के माध्यम से अभिव्यंजित करना है कि किस प्रकार से वैश्वीकरण को प्रवासी साहित्य ने एक गति और बल प्रदान करके प्रवासी जीवन को एक सशक्त व स्थायी स्वरुप में विश्व पटल पर अंकित कर दिया है। यह बताने का उद्देश्य भी निहित है कि प्रवासी संवेदनशील मन की छटपटाहट और वैश्वीकरण का प्रभाव सूक्ष्म और मार्मिक ढंग से प्रवासी देशों के कथा–साहित्य में अभिव्यंजित है।

शोध विषय का महत्व

गद्य साहित्य की कहानी विधा अभिव्यक्ति का एक ऐसा सहज व सशक्त माध्यम बन गया है जो सर्वसाधारण को भी अपनी ओर आकर्षित करता है। समाज का एक सहृदय पाठक कहानियों को पढ़कर अथवा सुनकर उसमें उठाये गये प्रश्न व उद्देश्य को समझ सकता है। प्रस्तुत शोध विषय में अमेरिकी प्रवासी महिला कथाकारों के कहानी संग्रहों में अभिव्यक्त संवेदनाओं के विविध रूप हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं कि भारतीय बनाम पाश्चात्य संस्कृति के अर्न्तद्वन्द्व के बीच जीवन यापन करना कितना कठिन व सघंर्षपूर्ण होता है। एक भारतवासी जिसे भारतीय मूल्यों के साथ जीने की आदत है, जब विदेश जाता है और वहाँ प्रवासी मूल्यों से दो–चार होता है तो उसे न जाने कितने सघंर्षों व कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन सभी स्थितियों, द्वन्द्व व संवेदनात्मक पक्षों का यथातथ्य रूप से चित्रण कर उन्हें पाठकों के सम्मुख विश्लेषित करना भी इस शोध का एक आवश्यक अंग है। यह शोध प्रवासी जीवन की विविध समस्याओं को उकेरने के साथ–साथ प्रवासी भारतीयों का अपने देश के प्रति लगाव भी प्रदर्शित करता है। प्रवास में रहने वाले लेखक विदेश में हिन्दी भाषा के साहित्य को रचकर एक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, जिसके द्वारा हिन्दी न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी प्रतिष्ठित हो रही है।

अनुसंधान पद्धति

मानव एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए निरन्तर खोज, शोध व अनुसंधान आदि करता ही रहता है। मानव की यह जिज्ञासु प्रवृत्ति जन्मजात होती है, जिसके कारण अनुसंधान लगातार जीवन के हर क्षेत्र में चलता ही रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है। श्रद्धा, लगन, निष्ठा व अथक परिश्रम से किये जाने के कारण अनुसंधान स्थायी ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में है। मेरे शोध कार्य में प्रमुखतः विवेचनात्मक, वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा। अंत में सम्पूर्ण शोध कार्य का निष्कर्ष दिया जायेगा।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य

शोध कार्य हेतु प्रवासी साहित्य पर मेरे द्वारा चयनित विषय ''प्रवासी महिला कथाकारों का कथा–साहित्य : संवेदना एवं शिल्प (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)'' पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रवासी साहित्य पर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य व लघु शोध कार्य हुआ है, वह मेरे शोध कार्य के विषय से बिल्कुल भिन्न है। मेरे शोध कार्य से पूर्व प्रवासी साहित्य के जिन विषयों को लेकर शोधकार्य किया गया है उसकी सूची नीचे दी जा रही है, जिसके द्वारा यह सत्य निर्धारित हो जाता है कि मेरे शोध कार्य का विषय मौलिक व भिन्नता लिए हुए एक नया कार्य है।

1. **सुषम बेदी के कथा साहित्य में प्रवासी भारतीय समाज के विविध पक्ष**

   शोध छात्रा– गुरुप्रीत कौर

   शोध निर्देशिका– हरसिमरन कौर

   पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाब

   ३ सितम्बर, 2012

2. **सतहत्तर कथा साहित्य में प्रवासी जीवन मूल्य**

शोध छात्रा – रजनी गुप्ता

शोध निर्देशिका – शोभा सावित्री चन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

9 जून, 2014

3. **साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में प्रवासी जीवन की समस्याएँ**

शोध छात्र – विरेन्द्र कुमार

शोध निर्देशिका – मीनाक्षी ठाकुर

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 31 दिसम्बर, 2014

4. **सुषम बेदी के उपन्यासों में अर्न्तद्वन्द्व**

शोध छात्र – रेनू बाई

शोध निर्देशिका – एन॰ डी॰ कुमार

पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाब

31 दिसम्बर, 2014

5. **उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी के बदलते चेहरे**

शोध छात्र –वी॰ शैलेश

शोध निर्देशिका –डा॰ पी॰ के॰ अजीत कुमार

महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम

दिसम्बर, 2014

6. **प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य सांस्कृतिक, स्मृति और समायोजन के द्वन्द्व**

शोध छात्र – केदार कुमार मण्डल

शोध निर्देशक– प्रो. गोविन्द प्रसाद, डॉ. रायचन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

7. डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और महिलाओं की स्थिति

शोध छात्र – सुबोध शर्मा

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गाँधी नगर

8. हिन्दी डायसपोरा लेखन में स्वदेश की खोज (लघु शोध)

शोध छात्रा – जया शर्मा

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

9. गिरमिटियाँ और प्रवासी भारतोयों की समस्याएँ (लघु शोध)

शोध छात्र – रामदर्शन

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय ''प्रवासी महिला कथाकारों का कथा–साहित्य : संवेदना एवं शिल्प (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)'' को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है जो इस प्रकार हैं–

प्रवासी महिला कथाकारों का कथा–साहित्य : संवेदना एवं शिल्प

(अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)

प्रथम अध्याय

1.1. प्रवासी जीवन : अवधारणा एवं स्वरूप

1.1.1. प्रवास का शब्दगत अर्थ

1.1.2. प्रवास के सन्दर्भ में दी गयी विभिन्न परिभाषाएं

1.1.3. प्रवास के कारक

1.1.4. प्रवास के आकर्षक तत्व

1.1.5. प्रवास के प्रत्याकर्षक तत्व

1.1.6. प्रवास के रूप

1.1.7. प्रवासी भारतीयों की श्रेणियाँ

1.1.8. प्रवास के परिणाम

1.1.9. अमेरिका में प्रवासी भारतीय (ऐतिहासिक दृष्टि मे)

1.1.10. प्रवासी भारतीयों के सन्दर्भ में भारत सरकार की नीति

1.2. प्रवासी हिन्दी साहित्य : एक अध्ययन

1.2.1. प्रवासी कथा साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि

1.2.2. अमेरिका में प्रवासी हिन्दी साहित्य

द्वितीय अध्याय

अमेरिकी प्रवासी महिला कथाकारों का कथा साहित्य : एक सर्वेक्षण

2.1. कथाकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1.1. उषा प्रियम्वदा

2.1.1.1. एक कोई दूसरा

2.1.1.2. प्रतिनिधि कहानियाँ

2.1.1.3. कितना बड़ा झूठ

2.1.1.4. बनवास

2.1.1.5. सम्पूर्ण कहानियाँ

2.1.2. सुषम बेदी

2.1.2.1. चिड़िया और चील

2.1.2.2. यादगारी कहानियाँ

2.1.2.3. तीसरी आँख

2.1.2.4. सड़क की लय

2.1.3. सुधा ओम ढ़ींगरा

2.1.3.1. वसलूी

2.1.3.2. कौन सी ज़मीन अपनी

2.1.3.3. कमरा नं. 103

2.1.3.4. दस प्रतिनिधि कहानियाँ

2.1.3.5. सब कुछ और था

2.1.4. सुदर्शन प्रियदर्शनी

2.1.4.1. उत्तरायण

2.1.4.2. खाली हथेली

2.1.4.3. काँच के टुकड़े

2.1.4.4. मेरी प्रिय कहानियाँ (प्रकाशनाधीन)

2.1.4.5. आर या पार (प्रकाशनाधीन)

2.1.5. पुष्पा सक्सेना

2.1.5.1. चाहत की आहट

2.1.5.2. पुष्पा सक्सेना द्वारा संकलित कहानियाँ

2.1.5.3. मीत मेरे तथा अन्य कहानियाँ

2.1.6. इला प्रसाद

2.1.6.1. उस स्त्री का नाम

2.1.6.2. इस कहानी का अंत नहीं

2.1.6.3. तुम इतना क्यों रोइ! रूपाली

तृतीय अध्याय

अमेरिकी प्रवासी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में सामाजिक एवं राजनैतिक संवेदना

3.1. संवेदना का आशय एवं स्वरूप

3.2. **सामाजिक संवेदना**

3.2.1. रिश्तों का खोखलापन

3.2.2. लैंगिक विभेद

3.2.3. स्त्री वेदना

3.2.4. वृद्धावस्था की त्रासदी

3.2.5. दैनिक जीवन की समस्याएँ

3.2.6. नस्लवाद

3.2.7. कुप्रथाएँ– दहेज, बेमेल विवाह, बाँझपन, वैधव्य आदि

3.2.8. अन्य

3.3. राजनैतिक संवेदना

3.3.1. वर्तमान शासन प्रणाली

3.3.2. सत्ता लोलुपता

3.3.3. भ्रष्टाचार

3.3.4. चुनावी राजनीति

3.3.5. परिवर्तित होते हुए राजनैतिक मूल्य आदि

3.3.6. अन्य

चतुर्थ अध्याय

अमेरिकी प्रवासी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में आर्थिक, धार्मिक एवं मानवीय संवेदना

4.1. आर्थिक संवेदना

4.1.1. नव धनाढ्य वर्ग की मानसिकता

4.1.2. उपभोक्तावादी दृष्टिकोण

4.1.3. अर्थ का जीवन में महत्व

4.1.4. टूटते रिश्तोंका सच अर्थ के सन्दर्भ में

4.1.5. धनार्जन के लिए गलत तरीकों का प्रयोग

4.1.6. अन्य

4.2. धार्मिक संवेदना

4.2.1. धर्म का स्वरूप, अंधविश्वास

4.2.2. धर्म और नैतिक मूल्यों की टकराहट

4.2.3. भारतीय बनाम पाश्चात्य संस्कृति का द्वन्द्व

4.2.4. सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट

4.2.5. पाश्चात्य संस्कृति की स्तुति

4.2.6. पारम्परिक उत्सव और रीति–रिवाज

4.2.7. सांस्कृतिक आघात

4.2.8. अन्य

4.3. मानवीय संवेदना

4.3.1. अस्तित्व बोध

4.3.2. रागात्मक अभिव्यक्ति

4.3.3. असंतोष की अभिव्यक्ति

4.3.4. मानसिक द्वन्द या तनाव

4.3.5. अकेलापन

4.3.6. मृत्युबोध

4.3.7. कुण्ठा

4.3.8. अलगाव

4.3.9. अन्य

पंचम अध्याय

अमेरिकी प्रवासी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में पात्र योजना, भाषा एवं शिल्प

5.1. पात्र योजना एवं चरित्र–चित्रण

5.1.1. कथानक की दृष्टि से पात्रों का वर्गीकरण

5.1.1.1 प्रधान पात्र

5.1.1.2. गौण पात्र

5.1.1.3. अन्य

5.1.2. चरित्र–चित्रण की दृष्टि से पात्रों का वर्गीकरण

5.1.2.1. स्थिर पात्र

5.1.2.2. विकासशील पात्र

5.1.2.3. अन्य

5.2. भाषागत वैशिष्ट्य

5.2.1. शब्दगत प्रयोग

5.2.2. भाषागत प्रयोग

5.2.3.अन्य भाषागत वैशिष्ट्य

5.3. शिल्पगत वैशिष्ट्य

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

कोश

विश्वकोश

संदर्भ ग्रन्थ

पत्र–पत्रिकाएँ

साक्षात्कार

प्रश्नावली

परिशिष्ट

कोश

- हिन्दी साहित्य कोश : धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1985
- हिन्दी शब्द कोश : डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1995

आधार ग्रन्थ

- इस कहानी का अंत नहीं, इला प्रसाद, जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007
- उत्तरायण, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011
- एक कोई दूसरा, उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
- कमरा नम्बर 103, सुधा ओमं ढ़ींगरा, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, 2013
- कितना बड़ा झूठ, उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- कौन सी जमीन अपनी, सुधा ओम ढ़ींगरा, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2010
- चिड़िया और चील, सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995
- तीसरी आँख, सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
- दस प्रतिनिधि कहानियाँ, सुधा ओम ढ़ींगरा, शिवनाथ प्रकाशन, सीहोर, 2015
- पुष्पा सक्सेना द्वारा सकंलित कहानियाँ, पुष्पा सक्सेना, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2014
- प्रतिनिधि कहानियाँ, उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
- यादगारी कहानियाँ, सुषम बेदी, हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2014
- वनवास, उषा प्रियम्वदा, पेंगुइन बुक्स इंडिया गुड़गाँव, 2009
- वसलूी, सुधा ओम ढ़ींगरा, सहोता एंड सन्ज, जालधंर पजांब, 2001
- सड़क की लय, सुषम बेदी, ज्ञान विज्ञान एजूकेयर, नई दिल्ली, 2017
- सम्पूर्ण कहानियाँ, उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

सन्दर्भ ग्रन्थ

- इंग्लैण्ड का इतिहास, शिवकुमार, एस.चाँद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली 1984
- इंग्लैण्ड का इतिहास, पार्थ सारथि गुप्ता, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004
- इतर, प्रवासी महिला कथाकारो ंकी कहानियाँ, डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2015
- गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में जीवन–मूल्य, रीता शर्मा, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2009
- निराला साहित्य मे ंजीवन दर्शन, डॉ. विनोदिनी श्रीवास्तव, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ 1998
- नई सदी का कथा समय, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2015
- प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा, कैलाश कुमारी सहाय, अविराम प्रकाशन, दिल्ली, 1994
- प्रवासी हिन्दी लेखक, डॉ. अलका प्रदीप दीक्षित, उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कानपुर
- प्रवासी आवाज, अंजना सधंरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रवासी भारतीयों की पीड़ा, अरविन्द मोहन, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1998
- प्रवासी और पराराष्ट्रीय समुदाय, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2007
- परम्परा, सर्जन और उपन्यास, विनोद तिवारी, लोकभारती इलाहाबाद, 2002
- फिजी में प्रवासी भारतीय, डॉ. सूचीगुप्ता, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, 2010
- फिजी में प्रवासी भारतीय, जगदीश प्रसाद गुप्त चतुर्वेदी, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद, नई दिल्ली, 1985

- फिजी मे ंहिन्दी : स्वरूप और विकास, विमलेश कानित वर्मा, धारा वर्मा, पीताम्बरा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- बातें मुलाकातें, डॉ. प्रीत अरोड़ा, सुमेधा बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
- भारत का भूमण्डलीकरण, अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2003
- भूमण्डलीकरण, कमल नयन भाबरा, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 2005
- भूमण्डलीकरण उत्तर सांस्कृतिक विमर्श, सुधीश पचौरी, आनन्द प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
- भूमण्डलीकरण, बाजार और हिन्दी, सुधीश पचौरी, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
- भोजपुरी उपन्यासों में जीवन–मूल्य, डॉ. बलिराम प्रसाद, डी. पी. एस. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2008
- मॉरीशस मे ंभारतीय प्रवासियों का इतिहास, के. हाजरी सिंह, मैक्मीलन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974
- महिला रचनाकारों की कहानियो ंमें जीवन मूल्य, डॉ. भारतीय शेलके, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2008
- मानव मूल्य और स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास, बलराज सिंह मार, खामा पब्लिशर्स, 2002
- मानव मूल्य और साहित्य, डॉ. धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- रागेय राघव के उपन्यासों में मानव मूल्य, डॉ. सुनीता बानी, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007
- वैश्विक रचनाकार कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ (साक्षात्कार संग्रह) : डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा, शिवना प्रकाशन, सिहोर, 2015
- साठोत्तरी हिन्दी खण्डकाव्यों में जीवन मूल्य, सुश्री ऋतु, शिशि प्रकाशन, मेरठ, 2008

- साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तित नारी जीवन–मूल्य, डॉ. छाया देवी घोरपडे, विद्या प्रकाशन, कानपुर
- साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य, बिनीता अरोरा, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999
- हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य–संक्रमण, डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1997
- हिन्दी उपन्यासों में नारी, डॉ. शैल रस्तोगी, वि.भू. प्रकाशन, गाजियाबाद, 1977
- हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, डॉ. रमेश चन्द्रलवानियाँ अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, 1973
- मॉरीशस हिन्दी कथा यात्रा, विनोद बाला अरूण, विद्या विहार, नई दिल्ली, 1997

पत्र–पत्रिकाएं

- पूर्वाग्रह
- आलोचना
- कथादेश
- कथाक्रम
- आजकल
- वर्तमान साहित्य
- साहित्य अमृत
- नया ज्ञानोदय
- हंस
- सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान
- साक्षात्कार

- साहित्य शिल्पी
- साहित्य कुंज
- अभिव्यक्ति
- अनुभूति
- हिन्दी चेतना
- धर्मयुग
- कथान्तर
- देशान्तर

प्रवासी विशेषांक

- विशाल भारत, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी
- जीवन साहित्य, मासिक, बनारसी दास चतुर्वेदी
- प्रवासी संसार, संपादक राकेश पांडये
- साक्षात्कार प्रवासी अंक
- गगनांचल, प्रवासी विशेषांक
- संयम लोक, भोपाल, प्रवासी, विशेषांक
- अक्षरम संगोष्ठी, दिल्ली, प्रवासी विशेषांक
- रचना समय, अतिथि संपादक तेजेन्द्र शर्मा
- शोध दिशा अतिथि संपादक इलाप्रसाद